अपने बारे में सीखना और अपने बारे में जानना, ये दो बिल्कुल अलग चीज़ें हैं

हममें से हरेक में, चेतना के स्तर पर भी और अचेतन के गहरे स्तर पर भी, पूरी मानवजाति समायी हुई है। हम हज़ारों सालों के परिणाम हैं; अगर हम अपने भीतर गहरे उतरें तो हमें पता चलेगा कि हममें से प्रत्येक में अतीत का सारा ज्ञान, सारा इतिहास समाहित हैं। इसीलिए आत्मज्ञान बहुत अधिक महत्त्वपूर्ण है; क्योंकि हम भीतर से पुराने, सेकेंडहैंड लोग हैं जो दूसरों की कही बातें दोहराते हैं। भले वह फ्रायड हो या और कोई विशेषज्ञ। यदि हम स्वयं को जानना चाहते हैं तो हमें किसी विशेषज्ञ की नज़रों से नहीं देखना होगा, बल्कि हमें स्वयं को सीधे तौर पर देखना होगा।

बग़ैर 'द्रष्टा' हुए हम कैसे अपने आप को जान सकते हैं? और जानने से हमारा क्या अभिप्राय है? जानना किसे कहते हैं? मैं कब किसी चीज़ को जानता हूं? मैं यहां बाल की खाल नहीं निकाल रहा हूं। मैं संस्कृत जानता हूं, या मैं लैटिन जानता हूं अथवा यूं कहें कि मैं अपनी पत्नी या अपने पति को जानता हूं। किसी भाषा को जानना और अपने पति या पत्नी को जानना, ये दो अलग चीज़ें हैं। मैं एक भाषा जान सकता हूं, लेकिन क्या मैं यह कह सकता हूं कि मैं अपनी पत्नी को जानता हूं, या अपने पति को? जब मैं कहता हूं कि मैं अपनी पत्नी को जानता हूं तो इसका अर्थ होता है कि उसके बारे में एक छवि मेरे पास है लेकिन वह छवि सदा अतीत की होती होती है और वह उसे सीधे देखने से मुझे रोकती है, क्योंकि हो सकता है उसमें बदलाव आना शुरू हो गया हो। तो तो फिर क्या मैं यह कभी कह सकता हूं कि मैं जानता हूं? जब कोई यह प्रश्न रखता है कि 'क्या मैं द्रष्टा के बिना स्वयं को जान सकता हूं?' तब देखिए क्या घटित होता होता है।

यह कुछ जटिल ही है मैं अपने बारे में सीखता हूं, इस सीखने के दौरान मैं अपने बारे में कुछ जानकारियां हासिल करता हूं और फिर उन अतीत की जानकारियों से मैं अपने बारे में और सीखना चाहता हूं। अपने बारे में मेरे पास जो संचित जानकारी है उसके माध्यम से मैं अपने को देखता हूं और अपने बारे में कुछ नया सीखने की कोशिश करता हूं। लेकिन क्या मैं यह कर सकता हूं? मुझे लगता है यह नामुमकिन है।

अपने बारे में सीखना और अपने बारे में जानना, ये दो बिल्कुल अलग-अलग चीज़ें हैं। सीखना एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है जिसमें संचय करने का भाव नहीं है; जबकि मेरा 'स्व' कुछ ऐसी चीज़ है जो लगातार बदलता रहता है, अपने नये विचारों, अनुभवों, जानकारियों, तब्दीलियों और संकेतों के साथ। सीखना कोई कोई ऐसी चीज़ नहीं है जो अतीत या भविष्य से जुड़ी हो। मैं यह नहीं कह सकता कि मैं सीख चुका हूं या सीखने जा रहा हूं। तो मन को सदा सीखने की अवस्था में रहना होगा, जिसका अर्थ है कि वह हमेशा सक्रिय वर्तमान में होगा और इसलिए ताजा व नवीन होना; कल के जमा किए हुए ज्ञान से वह बासी व पुराना नहीं होगा। तब आप देखेंगे कि जानकारियों को जमा करने की बजाय हमेशा सीखने की प्रक्रिया चलेगी; और तब मन देखने के लिए असाधारण रूप से सजग, सतर्क और तीक्ष्ण होगा। जो व्यक्ति यह कहता है कि मैं। अपने बारे में जानता हूं तो यह साफ है कि वह कुछ नहीं जानता। सीखना कभी खत्म न होने वाला एक जीवन्त सिलसिला है। इसका सीख चुकने से कोई लेना देना नहीं है। अपने बारे में सीखने के लिए अवलोकन की स्वतन्त्रता का होना बहुत ज़रूरी है लेकिन इस स्वतन्त्रता को तब नकार दिया जाता है जब हम अतीत के ज्ञान के जरिए चीज़ों को देखने लगते हैं।

'यू आर द वर्ल्ड' कैलिफोर्निया, 18 अक्टूबर 1968